उपसंहार

(Conclusion)

प्रेमचंद एक सामाजिक साहित्यकार थे। उनके जीवन के सारे प्रयास, सारी चिंता, उठा-पटक, भाग-दौड़ का मूल उद्देश्य था साहित्य और स्वदेश की सेवा। अपनी अस्वस्थता और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने उन्हें स्वाधीनता-संग्राम में सक्रिय होने का अवसर न दिया, परंतु अपनी लेखनी से जनमानस को सजग, शिक्षित और उद्वेलित करने में उन्होंने कोई कसर न छोड़ी। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी जीवन की रिक्तता, व्यर्थता और आश्रयहीन दयनीय स्थिति को पहचाना तथा संवेदना के धरातल पर उनके निरुपण में किस प्रकार नारी के आर्थिक शोषण, सामाजिक विषमताओं, धार्मिक रुढ़ियों तथा नैतिक प्रतिबंधों से मुक्त होने में सहयोग दिया, उस पर एक विहंगम आलोकपात्र किया गया है।

प्रस्तुत परियोजना-शोध-प्रबंध में हमलोगों ने प्रथम अध्याय में प्रेमचंद के जीवन एवं साहित्य पर एक विस्तृत आलोकपात किया है। उनकी साहित्यिक व्यक्तित्व से हम नवीन दिशाओं की ओर उन्मुख होते हैं।

उन्होंने अपने जीवन में लेखकीय जीवन का शुरुआत कैसे किया तथा उनकी लेखक जीवन की प्रेरणास्रोत आदि विषय पर भी विस्तृत चर्चा की। उनकी जीवन और साहित्य पर पड़ने वाले युगीन प्रभाव पर भी आलोकपात किया गया है।

दूसरे अध्याय में, हिन्दी उपन्यास परंपरा पर दृष्टि डाले गये हैं। मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास परंपरा को कैसे विकसित किया तथा कैसे वे उपन्यास के सम्राट बनने में समर्थ रहे उसी का अवलोकन इस अध्याय में हमें देखने को मिलताा है। उपन्यास साहित्य में मौलिक एवं अनुदित दोनों ही क्षेत्र में उन्होंने अपनी औपन्यासिक योगदान दिया है। उसी पर भी एक विहंगम दृष्टि प्रस्तुत किया गया है।

तीसरे अध्याय में प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासों में उपन्यासकारों ने कैसे नारी चित्रण किये थे उसी पर ध्यान दिया गया है। प्रेमचंद नारी चित्रण में नारी के अनेक रूपों का चित्रण किया था। उसके साथ ही उस समय के समकालीन उपन्यासकार भी नारी चित्रण पर अपनी पैनी दृष्टि डाली थी। प्रेमचंद के नारी-पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं के साथ प्रस्तुत अध्याय में नारी-पात्र के वर्गीकरण पर भी बल दिया गया है।

शोध-परियोजना के चतुर्थ अध्याय में प्रेमचंद के साहित्य में नारी की स्थिति पर चर्चा की गई है। 'गोदान', 'निर्मला', 'सेवासदन' तथा 'गबन' के विशेष संदर्भ में नारी-

मनोविज्ञान तथा नारी के विविध स्वरूपों पर बल दिया गया है, इस अध्याय में। चारों उपन्यासों के प्रमुख नारी चरित्र को उजागृत किया गया है तथा नारी के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं नैतिक स्वरूप पर विस्तृत आलोकपात किया गया है।

निष्कर्षत: प्रेमचंद के साहित्य में चित्रित नारी पात्राओं को युगीन आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों तथा बदलती नैतिक मान्यताओं का बी सामना करना पड़ा था। आर्थिक विषमताओं के कारण कितनी ही नारियां पत्नी और विधवा के संस्थागत दबावों के नीचे पिसकर निजी व्यक्तित्व खो चुकी थी। दहेज की कुप्रथा असहाय नारी को अधेड़ उम्र के वर के हाथ ही अपनी कन्या सौंप देने को विवश करती थी। कन्या भी भाग्य की दुहाई देकर, अपनी कल्पनाओं को विसर्जित कर ससुराल की ओर चल देती थी। विधवा होने पर पुन: उसे एक असहाय स्थिति में से गुजरना पड़ता था। अत: प्रेमचंद ने निराश्रया विधवा, पुत्रहीन विधवा तथा बेटी वाली विधवा का निरूपण करके उनकी वास्तविक स्थिति का परिचय दिया है।

प्रेमचंद के नारी-पात्र सामाजिक प्रतिबंधनों, धार्मिक-रुढ़ियों और पारम्परिक नैतिक मान्यताओं को तोड़ते हुए अपने लिए एक स्वस्थ दिशा की तलाश में संलग्न दिखते हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि प्रेमचंद के नारी पात्र प्रगतिशील हैं। नारी जीवन को दुर्दशा का दृष्टिपात करते हुए प्रेमचंद ने यथार्थ की रोशनी से जीवन की कटु सच्चाई को आलोकित करके उसके निराकरण का आग्रह किया है। प्रेमचंद की यथार्थपरक विचारधारा नारी-जीवन को दार्शनिकता और स्वप्निलता से उभार कर यथार्थ की ठंडी और तपती जमीन पर लाती है।

प्रेमचंद ने युगीन विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण करते हुए तत्कालीन समाज में प्रचलित कु-नियम के प्रति भी लोगों का ध्यानाकर्षित पर हैं। चिरंतन काल से हो रहे नारी के प्रति अन्याय के विरुद्ध लोकमत प्रतिष्ठित करने में भी प्रेमचंद की करुण कथा का भी हाथ रहा है। वर्तमान में नारी को मिलने वाले स्वतंत्रता तथा सामाजिक एवं राजनीतिक शिखर पर पहुंचने वाली सफलताएं हमें यह इंगित करते हैं कि प्रेमचंद ने उच्चकोटि के साहित्यकार थे जिन्होंने लोगों को जनमानसरूपी आँख खोल दिये थे। समअधिकार तथा समानताओं की भावनाएं एक अच्छे समाज को निर्मित कर सकते हैं। प्रेमचंद समर्थ एवं सफल साहित्यकार हैं, जिन्होंने तत्कालीन समाज-व्यवस्था में धृतती-पिसती भारतीय नारी की करुण स्थिति का बहुत सुंदर एवं सार्थक ढंग से निरूपित किया है।